भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर
Indian Institute of Technology Bhubaneswar

प्रेस विज्ञप्ति

आईआईटी भुवनेश्वर ने अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया

भुवनेश्वर, 20 फरवरी 2026: अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस की पूर्व संध्या पर, आईआईटी भुवनेश्वर ने इस अवसर को मनाने के लिए एक वार्ता का आयोजन किया। प्रख्यात लेखक, शिक्षाविद, संपादक और राजनीतिज्ञ श्री अभिराम बिश्वाल कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। यूनेस्को की घोषणा के अनुसार विश्वव्यापी स्तर पर मनाए जाने वाले इस कार्यक्रम का उद्देश्य भाषाई और सांस्कृतिक विविधता के प्रति जागरूकता बढ़ाना और बहुभाषावाद को बढ़ावा देना था। इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस का 26वां वर्ष मनाया जा रहा है, जिसका विषय है "बहुभाषी शिक्षा पर युवाओं की आवाज"।

अपने संबोधन में मुख्य अतिथि श्री अभिराम बिस्वाल ने इस बात पर बल दिया कि बहुभाषावाद समय की आवश्यकता है, क्योंकि एक भाषा दूसरी भाषा को समृद्ध और मजबूत बनाती है, जिससे सभी मातृभाषाओं के लिए एक सुरक्षित वातावरण बनता है। युवाओं की भूमिका पर जोर देते हुए उन्होंने युवा शिक्षार्थियों—विशेषकर प्रौद्योगिकी संस्थानों के छात्रों—से आग्रह किया कि वे स्वदेशी और क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन और पुनर्जीवन के लिए प्रौद्योगिकी का सक्रिय रूप से उपयोग करें। उन्होंने चेतावनी दी कि मातृभाषा की उपेक्षा करना सांस्कृतिक पहचान और सामूहिक ज्ञान को नष्ट करने के समान है और भाषाई विलुप्ति को रोकने के लिए सचेत प्रयास करने का आह्वान किया।

इस अवसर पर बोलते हुए, आईआईटी भुवनेश्वर के डीन (सतत शिक्षा) और प्रभारी निदेशक, प्रोफेसर वी. पांडु रंगा ने इस बात पर जोर दिया कि भाषाएँ केवल संचार के साधन नहीं हैं, बल्कि संस्कृति, इतिहास और पहचान के भंडार हैं, जो समावेशी और सार्थक शिक्षा की नींव बनती हैं। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप, आईआईटी भुवनेश्वर बहुभाषावाद को बढ़ावा देने और मातृभाषाओं के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध है, ताकि भावी पीढ़ियों में रचनात्मकता, समानता और गहन शिक्षा को बढ़ावा मिल सके।

संस्थान के रजिस्ट्रार श्री बामदेव आचार्य ने इस बात पर जोर दिया कि मातृभाषा में माँ का सार समाहित होता है—शक्ति, सौंदर्य और पहचान—और यह एक अनूठी सोच और सांस्कृतिक ज्ञान को समेटे रहती है। उन्होंने क्षेत्रीय और स्थानीय भाषाओं के संरक्षण, भाषाई विविधता के सम्मान और आने वाली पीढ़ियों को अपनी मातृभाषा सीखने और संजोने के लिए प्रोत्साहित करने की सामूहिक जिम्मेदारी पर बल दिया।

संस्थान के कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में कार्यक्रम में भाग लिया।